फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

कहत कबीर

हिसाब और अंकुश तन व मन को सिकोड़ते-छलनी करते हैं। छवि-मण्डी के ताने-बाने हिसाब और अंकुश ही हैं।

नई सीरीज नम्बर 161 नवम्बर 2001

चक्रव्यूह में दरारें

शान्त रह कर ***एस्कोर्ट्स*** और ***यामाहा*** के मजदूरों ने मैनेजमेन्टों की धमाके से छँटनी करने की योजना को फुस्स- सा कर दिया है। जुलाई, अगस्त और सितम्बर में योजना अनुसार घटनाओं के होने से मैनेजमेन्टें आत्मविश्वास से भरी थी, आत्ममुग्ध थी, फूल कर कुप्पा थी। मजदूरों को भड़काने तथा गरमाने के सिलसिलेवार प्रयास हुये और पुलिस ने भी इन कसरतों में खुल कर भाग लिया। लेकिन खतरा भाँप कर एस्कोर्ट्स तथा यामाहा के मजदूर ठण्डे, अत्यन्त ठण्डे हो गये। मजदूरों के इस ठण्डेपन ने एस्कोर्ट्स और यामाहा मैनेजमेन्टों के इस बार के खेल को भी बिगाड़ दिया। ऐसे में खिसियानी बिल्ली की तरह एस्कोर्ट्स के एग्री- मशीनरी ग्रुप के हैड मैन्युफैकचरिंग ऑपरेशन्स, श्री सुरेश आनन्द ने अखबारों में बयान छपवाया : "कम्पनी प्रबन्धन श्रमिकों की छँटनी के मूड में नहीं है।"

भोले के पुजारी बेशक हों पर बड़े साहब लोग इतने भोले नहीं होते (इतने मूढ भी नहीं होते) कि बड़े पैमाने पर मजदूरों को नौकरी से निकालना "मूड" की बात मानते हों। लगता है कि खीज, असमंजस, बौखलाहट से गुजर रही एस्कोर्ट्स और यामाहा मैनेजमेन्टें नया पैंतरा रच रही हैं। मोटी तनखाओं के संग- संग वर्ष में एक करोड़ 86 लाख रुपये तथा होण्डा कार बोनस में लेने वाले बड़े साहब बनने के लिये अत्यन्त काँइया और क्रूर बनना एक अनिवार्यता है। इसलिये "मजदूरों की जीत" की आड़ में नई वी आर एस- सी आर एस की खिचड़ी पकाना साहबों के लिये अब सामान्य क्रिया होगी।

अनुभव- विचार- सीख- नये अनुभव का सिलसिला चला है। एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट में इन ढाई महीनों में ट्रैक्टर डिविजन में नब्बे प्रतिशत मजदूर उपस्थित रहे हैं हालाँकि 24 अगस्त से थर्ड प्लान्ट वरकरों के फैक्ट्री से बाहर होने के समय से फस्ट के ट्रैक्टर डिविजन मजदूरों को भी मैनेजमेन्ट तनखा नहीं दे रही। इससे पहले होती टूल डाउन स्ट्राइकों में मात्र दस प्रतिशत मजदूर फैक्ट्री में रहते थे और नब्बे प्रतिशत बाहर चले जाते थे। इस बार फस्ट में मजदूरों ने टूल डाउन नहीं किये, मैनेजमेन्ट ने लोडिंग देनी बन्द की। ड्युटी पर उपस्थित हो पर वेतन नहीं मिलेगा! आरम्भ में 8 घण्टे फैक्ट्री में खाली बैठने से मजदूरों का दिमाग खराब हो जाता था पर मन्थन चला। उपस्थिति के बावजूद अगस्त के 10 दिन का वेतन काट लिये जाने पर गुस्सा बढा पर भड़का नहीं और सितम्बर व अक्टूबर के पैसों से खाली लिफाफों पर फस्ट के ट्रैक्टर डिविजन मजदूरों ने पूर्ण चुप्पी साध ली।

यामाहा (राजदूत) के मजदूरों ने हर किसी को साफ-साफ बता दिया कि साथी का मतलब साथी के संग कूँये में कूदना नहीं है बल्कि साथी का अर्थ है साथी को कूँये में पड़ने से रोकना। "साथी होने" और "साथ देने" में कितना भारी फर्क है! यामाहा मजदूरों के रुख ने कइयों को बौखलाया पर इन वरकरों ने एस्कोर्ट्स तथा यामाहा मैनेजमेन्टों की धमाके से छँटनी की योजना को फेल करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इन हालात में फस्ट प्लान्ट में साहबों को अक्टूबर- अन्त आते- आते मजदूरों को "समझाने" का अभियान शुरू करना पड़ा है। गुपचुप तैयारी के बाद पहली नवम्बर को फस्ट प्लान्ट में तोड़- फोड़ का प्रयास भी हुआ लेकिन फस्ट के मजदूरों ने शान्त रह कर उस कोशिश को मैनेजमेन्ट और उसके पट्ठों के लिये भद्दा- दर्दनाक मजाक बना दिया। छाँट कर मजदूरों को बुलाने से बात नहीं बनी तो बड़े- छोटे साहब लोग खुद मजदूरों के बीच आने लगे हैं। "कम्पनी हम सब का परिवार है" और "पावन त्यौहार का समय है" जैसी साहबों की बातें सुन कर मजदूर जब सवाल पूछते हैं तब साहबों के चेहरों पर हवाइयाँ उड़ने लगती हैं। साहब लौट जाते हैं, फिर आने के लिये।

मुद्दा साफ है। कम्पनी की री- स्ट्रकचरिंग, री- इंजिनियरिंग और आई.ई. नोर्म्स वाली एग्रीमेन्ट आपस में जुड़े हैं। इस त्रिगुट का अर्थ है एस्कोर्ट्स और यामाहा में बड़े पैमाने पर मजदूरों की छँटनी। ऐसे में "मार्केट की दिक्कतों" को ध्यान में रखने का मतलब फिसलने की राह पकड़ना है, रपट ही रपट है इस राह में। असल ध्यान देने वाली बात यह है कि मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका 60 प्रतिशत सरकारें एक्साइज व अन्य टैक्सों में ले लेती हैं; 15 प्रतिशत बैंक ले लेते हैं ब्याज में; 10- 12 प्रतिशत डायरेक्टर- मैनेजर कट- कमीशन में खा जाते हैं; 5- 7 प्रतिशत शेयर होल्डरों को डिविडेन्ड में; 5- 7 प्रतिशत कम्पनी के विस्तार में लगता है। ***मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका मात्र दो प्रतिशत मजदूरों को मिलता है।*** जोंकों का चूसना बदस्तूर जारी रखने, चूसना बढाने का अर्थ है मजदूरों की छँटनी करना और यही "मार्केट में दिक्कतों" का मतलब है।

धमाके से छँटनी करने को फुस्स कर चुके एस्कोर्ट्स और यामाहा के मजदूर आगे "जीत" की आड़ में लाई जाने वाली नई वी आर एस- सी आर एस से भी निपट सकते हैं। बेशक, इससे जोंकों को परेशानी होगी।■

मण्डी की महिमा

उषा टेलिहोइस्ट मजदूर : "जुलाई 2000 की तालाबन्दी व हड़ताल के जरिये 140 की छँटनी के बाद फैक्ट्री खुली थी। मरे मन से हम फैक्ट्री में काम में लगे क्योंकि रोजी के बिना आज रोटी नहीं है। मण्डी की बलि वेदी पर मैनेजमेन्ट- यूनियन एग्रीमेन्ट द्वारा हमारे साथियों की बलि के बाद ज्यादा दिन नहीं बीते थे कि फिर मण्डी का रोना शुरू हो गया, 'मार्केट में कम्पनी का माल नहीं बिक रहा!' मैनेजमेन्ट ने मार्च से हर महीने हफ्ते- पन्द्रह दिन की ले- ऑफ लगानी शुरू कर दी। कारण : 'काम नहीं है' बताया। और, यही कारण बता कर 7 सितम्बर से कम्पनी ने फिर फैक्ट्री में तालाबन्दी कर दी है। लॉकआउट हम 215 मजदूरों के लिये है, स्टाफ के 60- 70 लोग फैक्ट्री में जा रहे हैं।"

नोर्थ वैस्ट एक्सपोर्ट वरकर : "एक हफ्ते से फैक्ट्री में उत्पादन बन्द है। कम्पनी कह रही है कि बाहर के देशों में माल की माँग कम हो गई है।"

आटोलैम्प मजदूर : "फैक्ट्री में काम बहुत कम है। कम्पनी ने इस हफ्ते दो दिन की सवेतन छुट्टी दी। अगस्त की तनखा हमें 25 सितम्बर को जा कर दी और आज 10 अक्टूबर तक तो सितम्बर के वेतन का जिक्र तक नहीं है।"

(बाकी पेज चार पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

..... खतों से ..... पत्रों से .....

✶ मेरे सपनों में अक्सर ही , आ जाता है 'ताजमहल'
मेरे कटे हुये हाथों को , दिखलाता है 'ताजमहल' ।
मैंने कठिन साधना करके , एक स्वप्न साकार किया
मेरे क़लाकार को दोषी , ठहराता है ' ताजमहल' ।
पिटा ढिंढोरा , लुटा खजाना , शहंशाह ने इश्क किया
एक इश्क है जो हर दिल में , बनवाता है 'ताजमहल' ।
किसे नहीं मालूम , इश्क है सोने- चाँदी से बढकर
लेकिन सोने- चाँदी के ही , गुण गाता है 'ताजमहल' ।
दौलत की मुट्ठी में हैं , 'राजेन्द्र' चाँदनी रातें भी
सुना कि पूनम में ज्यादा- ही, इठलाता है 'ताजमहल' ।

— राजेन्द्र , लखनऊ

✶.... हथियारों का विक्रयार्थ प्रदर्शन है । मौत का व्यापार, भूखों नंगों की अमानवीय मौत — यह समृद्धों का आखेट है । कुछ श्रमिकायें .....

- रचेता के हाथ
  न आती है रचना ।
  कैसा अन्याय है —
  भूखा मजदूर अपना ।।
- किसान शीत ताप —
  सह कर के बरसात ।
  अमीरों को बेच देता
  खुश्बूदार सस्ते में भात ।।
- गंदी बस्ती में —
  सेठ सोए गद्दे पर ।
  नेता चुनाव जीते —
  गरीबी के मुद्दे पर ।।
- मजदूरी कम है —
  भारी लाभ जेब में ।
  प्रजातन्त्र में क्रूरता —
  फर्क क्या अंग्रेजी साहेब में ।।
- किसान पर कर्ज है , निकला नहीं निदान ।
  फसल बिगड़ी तो — दे दी अपनी जान ।।

— गफूर 'स्नेही' , उज्जैन

✶ अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर की दो इमारतों और पेंटागन के एक हिस्से को , विमान टकराकर , ध्वस्त कर दिया गया । इस कृत्य के निहितार्थ पर यदि गम्भीर चिंतन नहीं किया गया तो ,निकट भविष्य में , मानव जाति का विनाश निश्चित है । तीन बातें हैं । एक , कोई देश कितने भी सुरक्षा प्रबंध करे , वह सदैव असुरक्षित है । तथ्य सर्वज्ञात है अतः वर्णन करना व्यर्थ है । दो, यह कार्रवाई आतंक नहीं । आतंक में लोगों को डराया जाता है ताकि उनका शोषण किया जा सके । इस कार्रवाई का यह उद्देश्य नहीं है , स्पष्ट है । तीन , अपनी जिंदगी को स्वयं खत्मकर , यह कृत्य किया गया । कोई अपने जीवन को तभी स्वयं खत्म करता है जब वह किसी बात को अपनी जिंदगी से अधिक महत्वपूर्ण मानता है , अतः यही महत्वपूर्ण बात है ।

मनुष्य में मन , बुद्धि , चित्त और अहंकार (अंतःकरण चतुष्टय) होते हैं । चित्त में कोई भाव उठता है , बुद्धि निर्णय करती है कि यह सही है , तब मन उसे करने का संकल्प करता है और अहंकार उसे कार्यान्वित करता है , तभी कोई कृत्य होता है । मूल बात है भावना , चित्तवृत्ति । भावना दो प्रकार की होती है — वैयक्तिक व सामाजिक । वैयक्तिक — मैं अपनी सोचूँ , इसके लिये दूसरों का नुकसान करना पड़े तो करूँ । पंथ (तथाकथित धर्म) , जाति , नस्ल , रंग , राष्ट्र- राज्य , भाषा आदि विशिष्ट भावनाएं वैयक्तिक ही हैं , क्योंकि इनकी पहचान को व्यक्ति अपनी पहचान मानता है । वैयक्तिक भावना में विवेक नहीं होता , जुनून होता है अतः इसके वशीभूत हो कर व्यक्ति कोई सीमा , मर्यादा , परम्परा , नियम , मानवीयता नहीं मानता । वह निरपराधों , बच्चों , बूढों , औरतों , अपंगों की हत्या करता है , उनके जीने के साधन नष्ट करता है , गुपचुप व धोखे से कार्य करता है यानि अति आचार , अत्याचार करता है । इसलिये आज के युद्ध व अमेरिका में किया गया कृत्य अत्याचार हैं ।

दूसरा भाव है सामाजिक — सभी मेरे अपने हैं ..... स्पष्ट है कि वैयक्तिक (पंथ , जाति, रंग , नस्ल ,भाषा , नेशन- स्टेट) भाव से लोग दुख- चिंता- परेशानियाँ और सामाजिक भाव से सुख- शांति- आनन्द पाते हैं ।.....

✶ आज
माना कि
पाँव गाफिल हैं
नाखूनों में
सुइयाँ चुभी हैं
माथे पर
अश्वत्थामी घाव है
भीष्म की तरह
सारा बदन
तीरों से बिंधा है
लेकिन , संकल्पशक्ति
अभी , चूकी नहीं है
हमारा प्रयास है
कि पाँवों में
पुनः लहू का
संचार हो जाये
नाखूनों की सुइयाँ
सारे घाव , सिल डालें
और हम
दूने उत्साह से
अपने उसी
जीवन संग्राम में
कमर कस कर
कूद सकें
जय- पराजय की
कोई बात
हम नहीं सोचते
हमारा कर्म ही
हमारा कुरुक्षेत्र है
हमारा विश्वास है कि
हर समर में
कर्म- योद्धा ही
विजयी होता है ।

— आनन्द , बालाघाट

— मदन मोहन , अपना राज आन्दोलन , रतलाम

✶.... आपने लिखा है कि वेद , बाइबल , कुरान , संविधान, मार्क्सवाद आदि ऐसे दलदल हैं जो दीर्घकाल में शत्रुओं की रचना में योगदान देते हैं ।

मैं आपके इस कथन से सहमत नहीं हूँ क्योंकि कोई भी 'किताब' आप को लड़ने के लिये नहीं कहती । यदि कोई इनके कंधे पर बंदूक रखकर आतंकवादी गतिविधियाँ चलाना चाहें तो इसमें उस 'किताब' की क्या गलती है ?

यह तो ऐसी ही बात है कि आपको चाकू तरबूज काटने को दी गई पर उससे मानव का पेट काटा जा रहा है । तो इसमें चाकू का क्या दोष ?....

आज आवश्यकता है उन पुराने मूल्यों को फिर से तलाशने की , जिनकी बुनियाद पर समाज में अमन- चैन हुआ करता था । .... — चन्द्र मौलेश्वर , अलवाल (आन्ध्र प्रदेश)

✶.... भाई दुःखद स्थिति है हमारी । हमारे बीच से ही कुछ कामगार दलाल हैं , लोगों के हक पर जबरन अधिकार बनाये रखना चाहते हैं । मजदूरों को समय पर मजदूरी नहीं मिलती । मजदूर परेशान हैं ।..... — कलाधर , पूर्णिया

✶..... कम्प्यूटर के युग में पीड़ित मजदूर की समस्याएँ दिन- ब- दिन सुरसा के मुँह की तरह बढती जा रही हैं । छँटनी अब सर्वव्यापी रूप लेती जा रही है । बाजारवाद और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के शिकंजे आर्थिक विषमता को क्रूरता रूप में तब्दील करने को आमादा हैं । इन्सान को भूख से मारनेवाला इन्सान ही है । — उमेश 'रवि' , बक्सर

✶ दो जून की रोटी कै लिये संघर्ष करता मजदूर ।
बेकारी और गरीबी कै सामने वो बड़ा ही मजबूर ।।

— मुबारिक सिसगर , सुवासरा मण्डी (म.प्र.)

✶.... पाँच मंजिला इमारत .... बुड्ढा.... भूकम्प के कम्पन की तरह माथे पर पलड़ा रखे केंचुए जैसा बढ रहा था ... कदम डगमगाए , ऊपर से गिरा ... डॉक्टर का तमाशा शुरू होने के पहले ही उसके पंख पखेरू उड़ गये ।

.... व्यक्ति की कीमत 40 रुपये .....

इस समाज का विरोधाभास देखिए । किसी के पास एक टाइम खाना नहीं तो कोई पचाने की दवा खा रहा है .....

— बंशी लाल , इलाहाबाद

डाक पता
मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
फरीदाबाद—121001

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

✶ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये । नाम नहीं बताये जाते और अपनी बोतें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते ।

✶ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है । दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये ।

✶ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं । सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं । रुपये- पैसे की दिक्कत है ।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं । मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें ।

टालब्रोस : परत-दर-परत

टालब्रोस इंजिनियरिंग मजदूर : " प्लॉट 74 व 75 सैक्टर–6 में कम्पनी ने अप्रेल में देय वार्षिक वेतन वृद्धि अक्टूबर तक नहीं दी है। यूनियन ने अप्रेल में त्रिवर्षीय एग्रीमेन्ट के लिये माँग- पत्र दिया। कम्पनी की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने की दुहाई प्रबन्धकों ने दी, उत्पादन बढाने को कहा और आश्वासन दिया कि बढी हुई प्रोडक्शन के लागू होते ही सभी माँगें मान ली जायेंगी। 'घाटा है', 'काम नहीं है', 'बन्द करेंगे' के विलाप के उत्तर में यूनियन ने उत्पादन को सौ प्रतिशत तक बढ़वा कर साहबों से कहा कि लो कम्पनी चलाओ। वर्क लोड में भारी वृद्धि के बाद भी कम्पनी के रोने- धोने पर प्लॉट 74 में एक भट्टी से परमानेन्ट वरकरों को हटवा कर वह ठेके पर देने दी। लेकिन इतना सब कुछ लेने के बाद भी कम्पनी ने बदले में कुछ नहीं दिया। उल्टे, मैनेजमेन्ट प्लॉट 75 में फोरजिंग की दो मशीनों से 40- 50 परमानेन्ट वरकर हटाने और उन्हें भी ठेके पर देने की बात करने लगी। इससे इनकार पर 17 अक्टूबर को अचानक एक नया बन्दा उन मशीनों पर पहुँचा तो उसे भगा दिया गया। मैनेजमेन्ट ने 18 अक्टूबर को सुबह 7 बजे उसी बन्दे को फिर उन मशीनों पर भेजा तो दोनों प्लान्टों के मजदूर साहबों के दफ्तर पहुँचे। इस पर कम्पनी ने 200 के करीब कैजुअल- ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को फैक्ट्री से निकाल दिया, 175 परमानेन्ट मजदूरों को काम देना बन्द कर दिया और फिर 10 को सस्पैण्ड कर दिया। जानबूझ कर मैनेजमेन्ट ने पँगा लिया है। दिवाली आ गई है, बोनस का समय है इसलिये भी कम्पनी ने छेड़ा है। हर साल 20 प्रतिशत बोनस देते रहे हैं हालाँकि बदले में यूनियन एक- दो प्रतिशत उत्पादन बढवाती रही है।

" असल में पिछले साल की हड़ताल से कमजोरी आई है अन्यथा कम्पनी काबू में थी, काँपती थी। पिछले साल हड़ताल के समय परसनल मैनेजर धमकाते हुये कहता था कि तीन फैक्ट्रियाँ बन्द करवा कर आया हूँ। उस हड़ताल के समय मैनेजमेन्ट हावी हो गई।

" 18 अक्टूबर को ही पुलिस अधिकारी ने अगले दिन समझौता करवाने का आश्वासन दे कर एक ट्रक माल फैक्ट्री से निकलवाया। पुलिस का आश्वासन भी नेताओं जैसा ही निकला। श्रम विभाग में 24 अक्टूबर की समझौता वार्ता में कम्पनी पहुँची ही नहीं। छेड़खानी बढाते हुये कम्पनी 25 अक्टूबर को प्लॉट 75 में ट्रक ले गई और मैनेजरों- सुपरवाइजरों ने उसे लोड किया। गेट पर सड़क पर बैठ कर ट्रक रोक दिया गया और रावण की हवा निकाल दी। दशहरे की छुट्टी के बाद, 27 को सुबह दो पुलिसवाले आये और समझौता हो जायेगा कह कर एक अन्य ट्रक फैक्ट्री में लाये तथा हवा निकले ट्रक का माल उसमें रखवा कर ले गये। फिर दूसरा ट्रक लाये जिसके साथ 6- 7 गुण्डा- टाइप लोग थे जिनमें से 3 को कम्पनी की वर्दियाँ पहना रखी थी। उस ट्रक को भी मैनेजरों- सुपरवाइजरों ने लोड किया। ऐन लँच के समय उस ट्रक को फैक्ट्री से बाहर ले जाने लगे ताकि हँगामा हो। कम्पनी जिन गुण्डों को लाई थी उन्होंने आग में तेल डाला। दोनों पुलिसवाले देखते रहे और झगड़ा हुआ। गाड़ी व जीप में पुलिस तत्काल फैक्ट्री पहुँची और 28 मजदूरों को गिरफ्तार करके ले गई। कम्पनी ने जानबूझ कर झगड़ा करवाया यह इस बात से भी जाहिर है कि मजदूरों की गिरफ्तारी के तत्काल बाद डायरेक्टर तलवार ने फैक्ट्री का दौरा किया।

" जज ने जमानत देने से इनकार कर दिया और रोहतक जेल भरी है कह कर 14 दिन के लिये सोनीपत जेल भेज दिया। मंगलवार को दूसरे जज ने जमानत दी और 31 अक्टूबर को शाम को मजदूर सोनीपत जेल से छूटे। अदालत ने स्टे- वटे दे कर फैक्ट्री गेट से 200 मीटर दूर रहने को हमें कहा है। मजदूर बाहर हैं और टालब्रोस स्टाफ फैक्ट्री में जा रहा है। दोनों प्लान्टों के कुल 175 में से 43 मजदूरों को कम्पनी ने सस्पैण्ड कर दिया है।" ■

क्षमा करें, जगह नहीं रही

आदान-प्रदान

ए.टी.आई. मजदूर : " वेतन हर महीने देरी से देते हैं। समझ में नहीं आता कि कम्पनियों को क्या हो गया है – हर जगह वेतन देरी से देने के ढर्रे पर कदम बढा रहे हैं।"

नूकेम वरकर : " आज 8 अक्टूबर हो गया और अप्रेल- मई- जून- जुलाई- अगस्त- सितम्बर की तनखायें नूकेम मशीन टूल्स मैनेजमेन्ट ने हमें नहीं दी हैं। लादेन से बड़ी आतंकवादी नूकेम मैनेजमेन्ट है। कम्पनियों के आतंकवाद से कैसे निपटें ?"

सुपर ऑयल सील मजदूर : " फरवरी, मार्च और अप्रेल की तनखायें नहीं दी तो मई में हड़ताल हुई जो कि 18 जुलाई तक चली। नतीजा क्या रहा? खाक! अब अगस्त व सितम्बर की तनखायें हमें आज 13 अक्टूबर तक नहीं दी हैं।"

कटलर हैमर वरकर : " हम ने बहुत नेता बदल लिये – सब लीडर मैनेजमेन्ट की गोद में बैठ जाते हैं। अब की बार हम ने एक गरीब आदमी को नेता बनाया है और यूनियन भी बड़ी हस्ती वाली से नाता जोड़ा है। लोग कहते हैं कि गरीब आदमी गरीब की मदद करते हैं। दूसरी बात यह है कि पहले जितने नेता बनाये वे सब दादागिरी भी करते थे और मैनेजमेन्ट की गोद में बैठते थे। इस बार हम ने यह सोच कर कदम उठाया है कि एक तो बड़ी यूनियन है जिसका दबाव रहेगा और कुछ हमारी पकड़ में रहने वाला आदमी है क्योंकि गरीब है, कहाँ जायेगा। देखो क्या होता है।"

साधु फोरजिंग मजदूर : " कम्पनो ने वरकरों की कमेटी बनाई है। कमेटी की कोई वैल्यू नहीं है। एक दिन अचानक सेक्युरिटी ने एक कमेटी मेम्बर के थप्पड़ मारे। इस पर मजदूरों ने चक्का जाम कर दिया। थोड़े विचार- विमर्श के बाद हमें लगा कि कम्पनी की चाल है, जानबूझ कर लफड़ा किया है। हम ने काम शुरू कर मामले को ठण्डा किया और श्रम विभाग में कम्पनी के अनुचित श्रम व्यवहार की शिकायत डाल दी।"

अमेटीप मशीन टूल्स वरकर : " कई महीनों से कम्पनी वेतन भी समय पर नहीं दे रही – 25 तारीख तक खींच लेती है। हर महीने बातें होती हैं, पता नहीं क्या गूढ बातें होती हैं। तनखा के लिये चक्का जाम करते हैं तो मैनेजमेन्ट पैसे काट लेती है। डायरेक्टरों की पिटाई के बाद 19 सितम्बर को हमें अगस्त का वेतन दिया था। अब सितम्बर की तनखा आज 11 अक्टूबर तक नहीं दी है।"

न्यू एलनबरी मजदूर : " पहले फैक्ट्री में 5- 6 ठेकेदार थे, अब 17- 18 ठेकेदार हैं। कम्पनी में सब सी एन सी मशीनें ठेके पर दे दी हैं। तनखा सब वरकरों को देरी से, 15- 20 तारीख तक। इधर मैनेजमेन्ट ने कैन्टीन बन्द करने का नोटिस लगाया है। पूछने पर, सवाल करने पर परेशान करते हैं – 'जन्म तिथि का प्रमाण- पत्र लाओ!' "

फौजी आटो वरकर : " प्लॉट 44 सैक्टर–6 में बरसों से फैक्ट्री में लगातार काम कर रहों को भी कैजुअल वरकर कहते हैं और जब चाहें निकाल देते हैं। एक मजदूर का 23 अक्टूबर को गेट रोका तो हम ने विरोध में फैक्ट्री में चक्का जाम कर दिया। हम 24 अक्टूबर को ड्युटी के लिये पहुँचे तो सेक्युरिटी ने गेट पर सब को रोक दिया और कहा कि साहब तालाबन्दी बोल गया है। हमें फैक्ट्री में लॉकआउट कहते हैं और पुलिस की मदद से स्टाफ को तथा 12 नये लोगों को फैक्ट्री में ले जा रहे हैं।" ■

.....कानून.....

रूफ फैब वरकर : " 13/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में जुलाई, अगस्त और सितम्बर की तनखायें हमें आज 9 अक्टूबर तक नहीं दी हैं। दो साल का बोनस भी नहीं दिया है। ओवर टाइम की पेमेन्ट सिंगल रेट से लगाते हैं। हमें ई. एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं।"

आटोपिन मजदूर : " इन्डस्ट्रीयल एरिया प्लान्ट में हमें अगस्त और सितम्बर की तनखायें आज 31 अक्टूबर तक नहीं दी हैं। जबरन ओवर टाइम के लिये रोकते हैं और 11 महीनों के ओवर टाइम काम की पेमेन्ट नहीं दी है।"

अर्थ मूवर्स ओवरसीज वरकर : " बुढिया नाले के पास स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की 1500 रुपये महीना तनखा है। सिंगल रेट से पेमेन्ट पर हर रोज 3 घण्टे ओवर टाइम काम करवाते हैं और जून से सितम्बर तक किये ओवर टाइम के पैसे नहीं दिये हैं। ई.एस आई. कार्ड किसी वरकर को नहीं दिया है।" ■

झालानी टूल्स : जो है वह भी दो

रिटायर होने पर बकाया तनखाओं आदि-आदि की तो बात ही क्या, ग्रेच्युटी की राशि तक झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट नहीं दे रही। कम्पनी ने 1994 से प्रोविडेन्ट फण्ड भी जमा नहीं करवाया है। ऐसे में रिटायर होने, रिजाइन देने अथवा मर जाने पर प्रोविडेन्ट फण्ड में जो पैसे जमा रह गये हैं वही मजदूर के हाथ आते हैं। पैंतीस महीनों की तनखायें बिल्कुल नहीं देने और 24 महीने काट-पीट कर वेतन देने के कारण इन 5 वर्षों में जरूरत-दर-जरूरत की वजह से झालानी टूल्स के अधिकतर मजदूरों ने अपने भविष्य निधि खातों में से जितने पैसे निकल सकते थे वे निकाल लिये हैं। पर नियम ऐसे हैं कि 50-60 हजार रुपये निकाल नहीं सके और रिटायर होने पर प्रोविडेन्ट फण्ड के यह पैसे ही मजदूर को मिलते हैं। अब झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट ने मजदूरों के इन प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसों को हड़पने की चाल भी चल दी है।

12 अक्टूबर को दिल्ली हाई कोर्ट में यूनियन वकील मखीजा ने कहा कि मजदूर अपने प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसों से शेयर खरीद कर कम्पनी में शेयर होल्डर बनने को तैयार हैं ; मजदूर आधी तनखा में काम करने को राजी हैं; कम्पनी की 18 करोड़ 50 लाख रुपये की सम्पत्ति बेच कर बैंकों को पैसे दिये जाने पर मजदूर सहमत हैं ; कम्पनी बन्द होने से मजदूर बर्बाद हो जायेंगे ; कम्पनी चलाने की इजाजत दे कर रहम करें। मैनेजमेन्ट के वकीलों ने मैनेजमेन्ट- यूनियन समझौते और मजदूरों द्वारा दी जा रही कुर्बानी की दुहाई दी। बैंकों की तरफ से कोई एतराज नहीं हुआ। ई.एस.आई. और प्रोविडेन्ट फण्ड की तरफ से कोई आवाज नहीं आई। भूखमरी की कगार पर धकेल कर आत्महत्या करने को मजबूर किये जा रहे झालानी टूल्स के मजदूरों के वकील के एतराज सुनने तक से जज ने इनकार कर दिया और धमकी दी कि 5 साल बाद की तारीख दे देगा। दिल्ली हाई कोर्ट के जज कपूर ने निर्देश दिया कि यूनियन के नये चुनाव करवा कर पढे-लिखे, ग्रेज्युएट प्रतिनिधि को कम्पनी के डायरेक्टरों में शामिल किया जाये। और, श्रीमान जज ने अगली तारीख 10 जनवरी 2002 दी।

पहले-पहल अजूबा नजर आता यह सब दरअसल मैनेजमेन्ट-यूनियन-बैंक-ई.एस.आई.-पी.एफ.-अदालत के दायरे में सामान्य है। इसलिये बन्द होती कम्पनियों में मजदूरों के पैसे डूबना आम बात है। चण्डाल चौकड़ी बीते जमाने का मुहावरा हो गया है, मजदूरों को जकड़ने-चूसने के लिये तो हजारों मकड़जाल हर समय कार्यरत रहते हैं। झालानी टूल्स के मजदूरों की दुर्गत-दर-दुर्गत करने वाली प्रक्रिया को जानना-समझना कुछ मकड़जालों को पहचानना तो है ही, यह मकड़जालों को काटने की राहें भी इंगित करता लगता है। अतः बीस साल पर एक नजर :

1980-85 : मण्डी में टिके रहने के लिये गेडोर हैण्ड टूल्स में आटोमेशन और बड़े पैमाने पर मजदूरों की छँटनी। फरीदाबाद, कुण्डली, जालना, औरंगाबाद स्थित 6 प्लान्टों में कार्यरत 7300 मजदूरों में से 2300 को जबरन नौकरी से निकाला गया। फरीदाबाद में पुलिस-प्रशासन की सक्रिय मदद और मीडिया के मौन समर्थन से यूनियन ने मार-मार कर मजदूरों से इस्तीफे लिखवा कर मैनेजमेन्ट की छँटनी पॉलिसी को लागू किया।

1985-87 : आटोमेशन और छँटनी के बावजूद कम्पनी मण्डी में टिके रहने के काबिल नहीं बनी। गेडोर ने अपना हिसाब कर लिया और कम्पनी का नाम झालानी टूल्स हो गया। प्रचार हुआ 'झालानियों ने जर्मनों को बेवकूफ बना दिया'। दरअसल हुआ यह कि 'मुर्गी अण्डा नहीं देती तो क्या, मुर्गी को काट खाओ'।

1987-2000 : झालानी टूल्स बीमार घोषित। बी.आई.एफ. आर. की छत्रछाया। स्वस्थ करने के लिये योजना को मँजूरी। बैंकों से, सरकारों से रियायतें और मजदूरों से कुर्बानी ली गई। मजदूरों के 8 घण्टों के काम को 4 घण्टों का काम करार दिया गया और नतीजतन एस्कोर्ट्स मजदूरों के बराबर तनखा ले रहे गेडोर-झालानी टूल्स मजदूर 4 हजार तक भी नहीं पहुँच पाये जबकि एस्कोर्ट्स में तनखायें दस हजार रुपये हो गई। स्वस्थ करने की योजना 1992 में फेल घोषित। दूसरी योजना और फिर रियायतें व कुर्बानी। मजदूरों का ग्रेच्युटी का पैसा भी कम्पनी ने निकाल लिया। स्वस्थ करने की दूसरी योजना भी 1995 में फेल घोषित कर दी गई। इसके बाद बिना किसी स्वस्थ करने की योजना के, शुद्ध रिश्वतों के जरिये 5 साल तक धक्कमपेल। मजदूरों के प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसे 1994 से जमा करवाना बन्द। फरवरी 1996 के बाद 21 महीनों तक तनखायें नहीं दी। विरोध बढने पर, नवम्बर 97 से काट-पीट कर वेतन देना आरम्भ। जनवरी 2000 में अखबारों में मैनेजमेन्ट बदलने अथवा कम्पनी बन्द करने के इश्तिहार के बाद फिर तनखायें देना बन्द। जुलाई 2000 में, 13 साल की कसरत के बाद बी.आई.एफ. आर. ने झालानी टूल्स को समाप्त करने, वाइन्ड-अप करने का आदेश दिया।

कम्पनी की इन 13 वर्षों की बीमारी के दौरान मैनेजमेन्ट लगातार गुण्डागर्दी करती रही है और एक लीडर गिरोह से मजदूरों के भड़कने पर दूसरा लीडर गिरोह कमान सम्भालता रहा है। लीडरी का चक्रव्यूह ऐसा है कि बड़ी सँख्या में झालानी टूल्स मजदूर अभी तक इसे भेद नहीं पाये हैं और लहूलुहान हो रहे हैं।

लेकिन, यह किसी द्वारा उँगली पर गोवर्धन उठाना नहीं बल्कि यह मजदूरों द्वारा स्वयं कँकड़ उठाना रहा है कि :

– जून 1997 की मैनेजमेन्ट-यूनियन एग्रीमेन्ट को डिप्टी लेबर कमिश्नर को रद्द करना पड़ा।

–21 महीनों से बेगार करवा रही मैनेजमेन्ट को नवम्बर 1997 से फिर वेतन देना शुरू करना पड़ा।

– 1995 में बेचने के लिये खाली करवाये (मेन्टेनैन्स के बहाने) थर्ड प्लान्ट को मैनेजमेन्ट अभी तक बेच नहीं पाई है।

– जुलाई 2000 में मैनेजमेन्ट और जालना-औरंगाबाद-फरीदाबाद की यूनियनों के विरोध के बावजूद बी.आई.एफ.आर. को कम्पनी को वाइन्ड-अप करने का आदेश देना पड़ा।

– मार्च 2001में ए.ए.आई.एफ.आर. को मैनेजमेन्ट की कम्पनी चलाने की इजाजत माँगने वाली अपील, यूनियन वकील मखीजा आदि के समर्थन के बावजूद, डिसमिस करनी पड़ी।

इस सब के मद्देनजर झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट ने आखिरी चाल चली है।

कम्पनी की देनदारी तीन सौ करोड़ रुपयों के करीब है जबकि झालानी टूल्स की कुल सम्पत्ति मात्र 42 करोड़ रुपये की है। छह प्लान्टों के 4 हजार मजदूरों के 160 करोड़ रुपये फँसे हैं, 9 बैंकों के 80 करोड़ रुपये (अकेले देना बैंक के 36 करोड़ रुपये) फँसे हैं ; प्रोविडेन्ट फण्ड के 18 करोड़ ; ई.एस.आई. के 9 करोड़ 8 लाख रुपये ; ..... इन हालात में कम्पनी में पैसे लगाने, हिस्सेदार बनने को झालानियों को दुनियाँ-भर में कोई नहीं मिला। जबकि, 18 करोड़ 50 लाख की सम्पत्ति अपने हाथों बेचने में झालानी मैनेजमेन्ट को करोड़ों के वारे-न्यारे नजर आ रहे हैं। ऐसे में "पूरी बेसिक व डी.ए. दिलवायेंगे" के नाम पर मैनेजमेन्ट ने फिर लीडरी का आसरा पकड़ा है। दाँव पर हैं मजदूरों के प्रोविडेन्ट फण्ड में जमा पैसे भी। मजदूरों की बड़ी सँख्या कँकड़ उठायेगी तभी झालानी मैनेजमेन्ट का दाँव कटेगा। ■

मण्डी की महिमा...(पेज एक का शेष)

एस्कोर्ट्स क्लास वरकर : "फैक्ट्री से मशीनें जा नहीं रही। बिक नहीं रही। स्टॉक हो गया है। कम्पनी ने एक हफ्ते की सवेतन छुट्टी दी। अब भी फैक्ट्री में काम कम है।"

प्रिसीजन एक्सपोर्ट मजदूर : "एक हफ्ते से फैक्ट्री में काम नहीं है, हम 8 घण्टे बैठ कर आते हैं। कम्पनी कह रही है कि अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े की वजह से माल की माँग नहीं है।" ■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।